

ननिज।

পুরাকালিক গলপ।

ভগা

মানস

জীবন্ধিমচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়।

রচিত।

कनिकां छ।

ইংবৈকুতনাথ দাসের অনুবাদ যঞালতে মুদ্যাকিও হউল।
>৮৫৬:

विकालन।

স্কাব্যালোচক মাত্রেরই অত্র কবিত দয় পাঠে প্রতিটাতি দ্বিত্রক যে ইবা কদীত কাব্য রচনা রীতি প্রিবর্তনের এক পরীক্ষা বলিলে বলা সায়। তাহাতে গ্রন্থকার কতদ্র স্ততীর্ণ ক্ইয়াছেন তাহা পাঠক সহাশয়েরা বিবেচনা করিবেন।

हिन वरमत पृद्ध करे श्रम तहन। कारल राज्याम कानित्व गोदिन नार्र ए जिनि मुक्त प्रकृति प्रतिका प्रविका क्रेग्राह्मन । अवः एएकारल श्रीम्याग्यमाञ्च तक्षनाक्तियक्षनिक क्रे कारा कर्यत्व माधात्व म्हीयः उत्ती किर्तितात कान कण्यना किल मा तिक्षकिल्य मृत् मुख्य तक्ष्त मानानी ह करेतात जीवानित्यं मुद्र तथात्वः मादि केक्स्य मानानी ह करेतात जीवानित्यं मुद्र तथात्वः मादि केक्स्य करामाणि अवीकात महम्म दिख्य महम्म स्वक्षांक्विक करामाणि अवीकात महम्म दिख्य महम्म काक्ष नदीन द्यस्यत् अक्षत् । अ व्यक्ति अञ्चल नदम ।

लिकां।



शृक्षक लिख शला

Of hove I in such a wilderness as this. Where transport with security entaine. There is the happine of thy perfect birs. And here art thou a God indeed divise.

Gertrude of Hymny

But nortal pleasure, what art them to teach. The torrents smoothness eve it dash below.

Pod.

ननिज।

প্রথম সর

5

মহারণো অক্ষকার, গভীর নিশায়। নিৰ্মাল আকাশ নীলে, শশী ভেদে যায়। कामत्मत्र পाणः छान, मारह मनी करत । পবন চলিছে তায়, সর্সর্ স্বরে॥ নীচে তার অন্ধকারে, আছে কুদ্র নদী। ं अक्षकात महास्वत, वर्ष्ट् नित्रिं ॥ ভীম তরু,শাখা সব, জলে পরিণত। .गंडीत निष्णक काष (यन निमानट। द्रारथ श्रित नीटा भित्र कूम् उत्रग्र। क्लिकाञ्चवकमश निमाश मशन ॥ শাখার বিচ্ছেদে কভ্, শশধর কর। স্থানে স্থানে পড়িয়াছে, নীল জলোপর ॥ घात छटक ननी उटि, छुपू करन करन। कान की है भटाग्राट नाड़ा (नग्न वर्त क्ष

শুপু অন্ধার মাঝে, অলক্ষ্যা শরীর : কেনে ভীম পশু ছাড়ে, নিশাস গভীর॥ ध्यमः भा भा छत्र स्थ्यु, जीवन मर्गात् । আর শুধু শুনি এক, সঙ্গীতের স্বর॥ शर्जीत मक्रीठ (मरे, जाटम नहीं मिट्य ! ভীম শুৰো বনাকাশ, উঠে শিহরিয়ে॥ কথন কোমল স্থির করুনার স্বরে! যেন কোন সুখমগ়ী মলো প্রেমভরে॥ শুনিয়ে তাঁ মনে হয়, ঈষৎ আভাস। যেন কত সুখ স্বন্ধ, হয়েছে বিনাশ 🛭 কি কারণে ছঃখোদয় কিসের শারণে। कि हुई ना कारन उतु, मिलन नग्नरम ।। कथन भञ्जीतज्द भृवंजान ४८द्र। ত্রগভীর মোহে মন গুমুরিয়ে মরে॥ ছেঁড়ে হৃদয়ের ডোর গভীর যাতন। উচ্চা করে গলি গিয়ে মিশিগান সনে। ফ্লিয়ে উঠিছে ধনি, স্থির শুনা কেটে। इंका करत ननरनर डेर्ट या है करते ॥ व्यादत यनि मझीरजत स्मर (मधा शारे) यउत्नद्ध व्यानिकिशः, भारत् मद्ध मारे ॥ >

ननी जीदत तृक्ष नाहि हिल अक श्रांत । मीर्घक्रत कल्का क्रांचिट्ड (मर्थारन ॥ ছোট গাছে তারামত ফ্ল পুষ্পদলে। স্থির তার প্রতিৰূপ স্থির নদী জলে। স্থ স্বপ্নে যেন তারা, নিদ্রাভরে হাসে। গগণ শুমুরে মরে, স্থেময় বাদে। সেই স্থানে বসি এক নারী একার্কিনী। कूनशैन वटन (यन इन कर्मानशै॥ মিশেছে সে চন্দ্রিকার. ভাবে তার চিক্ত শুধু সে হলের ছায়া, অসতা জনিতা। যৌবন আশার সম ফুল ৰূপ ভার। দেখিয়া ফিরালে আঁগিথ, দেখি কিবে বার ॥ ষেন যে মধুর ভোরে বাঁধা তায় মন। স্বৰ্গ স্থখ তরে তার ন। চাই ছেদন ॥ যে ৰূপ যৌবন মোহে কবিরা ধেয়ায়। বারেক স্থপনে আসি হাসে আর যায় ॥ কি পভীর নিরমল প্রেমের প্রতিমা रेष्ट्रां करत भारत धति भूकि त्म महिमा॥

তিরাধীর। কুকমনা বিমলা অবলা। দবে নব পুবিতেছে যৌবনের কলা। মোহন সঞ্চীতে মন বেঁধেছে যতনে ৷ প্রেম যেন শুনিতেছে আশার বচনে। কত মোহে গলে হৃদি প্রকাশ না হয়। গোপনে উন্মাদ প্রাণ হৃদি বিদ্রয় 🎚 বদনে লখিত রেখা কত হয়ে যায়। ाक्ति नीहम त्यन भावम भक्ताश । शिवन सिनीन जाँथि मरक यन छ। । किছुই रमन वा आत ना धरत मश्माव ॥ প্রাণ মন জ্ঞান ধন জীবন যৌবন। সকলি করেছে যেন তায় সমর্পণ॥ এমন আশায় তার হৃদয় না চায়। সেত্ৰকে হৃদয়াঘাত যেন শোনা যায়। কোথাছতে আদে সেই সুমধুর গান। ভাছে কেন আশাভরে মোহে ভার প্রাণ

ললিতা সে রাজাঙ্গনা, জনক তাহার । প্রেম দোয়ে পাঠাইল কানন মাঝার।।

মবি তার সর্ব সার কমলা সে কলি। कान थारन शम्बदन किनिन डा मिन । কি কাষ রাজ্যেতে তার তারে দিয়ে জালা। ষৌতনের দোষ সে যে কি করিবে বালা। যৌবন যামিনী মাবে শশধর তার! প্রাণ মন ধন জ্ঞান **गा**হে ললিভার ॥ (म मचार्व धार्व मन (माँ भिन शाभन। वटल दुवि এडे मठ कार्षादन कीतन ॥ **এकाकिनी जा**दत यद पिरम्न अदना यदन । তথন বুঝি বা কত ভয়ে মলে কিনে 🖟 আমরি সে কাননে কি স্বর্গপুরে যায় ১ ভুলিন ভূলিন এক গভীর চিন্তায়। হারাতে কি আছে আর কি জয় কাননে नेशांत नकाल वन विदन धक कान ॥ চাঁদমুখ দেখা যদি পেত একবার। ভাই ভেবে যেত স্থাথে চির্দিন ভার।। कीवटन य मिटल हाश खर्खनामश्र। গতস্থৰ কালসাপ কাটিছে হৃদ্য় 🎚 **এका**किनी बा**काक्षना** निविष् निनाम । গেছে স্থ গেছে মান প্রাণ বুঝি যায়।

এ সব ত্যজিতে পারে যার মুখ দেখে। **८** दिवि अथन डाइंड त्कांश मिलि इत्रह्य ॥ যেন নভ রবি শশী তারা মেঘহীন। আर**ोड्स सूथ** विना घाटन डाउ निन ॥ मारिनी कुछ्ग कति कारत शालिल। কণ্টক কাননে কেন ছি'ড়িয়া ফেলিল 🛚। मलास एवं निहति छ बंहिका कि जात । अकाकिनी प्रति भाषि भाषि इट्रा शहन ॥ এমন চিন্তার এনী এলে। নদীস্থান। পুলকে আপনি হৃদি কাঁপে শুনে গান। मरी मिरा प्यामिरटर्ड अका अक उति। ভাহে নৰ যুব। এক গাহিছে বাস্রী। একবার বলে বটে আমারি মন্মর্থ ! তথন নিভায় বুঝে মিছে মনোরথ # বিধি কেন লিখিবে তা আমার কপালে। কিন্তু আর কেবা আসে এখানে একালে। পুলকে নিস্পন্দ বামা নাহি স্বরে কথা। इंग्लाकरत स्मर दिखे छैटड़ गात उथा। তীরে আসিয়াছে ভরি অতি দ্রুত হয়ে। দেখিতে দেখিতে তুরে তুরের ক্লয়ে 🛚

8

ভুজনে ছুজনে পেষে, ছুজনার মুখ চেয়ে,
আনিমিক্ ঝরিছে নগ্য।
স্দয়ে ভাঙ্গিছে ক্লি, কেন কেন আরে বিধি,
সে সময় হলোদা মরও ॥

্পালে কি হয় কবে, আর কি ক**খন হ**বে. এমন অচেত স্থাপক্ষণ।

ংন রূপ জপি মনে, চুংখর গভীর বনে, এক। ভয় নাহয় কখন।

িললিতে নলিতে কিরে,পুনং কিপেয়েছি কিয়ে, কিছে মন্মথ বছফলে ।

্র না বচন স্বরে, নীরবেতে আঁহি ফারে, চেয়ে রয় মুখুখ বদুনে॥

ংখা তথা প্রেমাক্ষরে, যে মন্ত্রে মোছিত করে, বহিবারে এছার জীবনে।

' হা বিধি'' এশব্দ করে, রহিল ভাহার ধরে,

मनःकथा स्नीन नग्नरम ।

আমরি বিধির বিধি, নারত্র এস্কুখ নিধি, মানবের ললাটে লিগন। বুচে গেল মোছ বোর, বলে প্রাণনাথ মোর,

ছেড়ে যাবে আর্কি কখন।

" নালোনা " মন্থধ কয়, "যদিন জীবন রয়,
জ্বয়ে রাখিব তোমা ধনে !,,
বাহা বলে বল পতি, কেন একাবনে গতি,
জামি হেখা জানিলে কেমনে ৷ !

C

ম্মুথ

क आकि निया विश्वरति, नाकि ज्यानि निमाज्यत, किकाल घटिए ब्याविश्व ब काबि किरमत लागि, जलात करलारण जानि দেখি আমি একা এ তরিতে।। क्यांद्र शूद्धा ननी, उत्र निद्रवि । নাচে ভাহে শশির কিরণ। রুরে হলে। ভয় প্রাণে: বিস্ময় হলেম স্থানে, (मशि এই वकुत लिथन। 'রাজা জানে বিবরণ, ললিভারে দেছে বন, তব প্রাণ বধিবে আপনি। তোমাকে নিজিত লয়ে, এনেছি এখানে বয়ে. उति लास भना ७ अथनि। তৰ প্ৰিয় বন্ধ ** '

B

"পড়িলাম কাল িপি মন্তক ঘুরিল। যেন ধরা অন্ধকারে ঘূরিতে লাগিল। জনিতে পারিনে পরে কিহলো আমার ! ছিল কি জিবন মম ছিল কি সংসার। প্রলয় প্রনে যদি ব্রহ্মাণ্ড কাটিত। আমার গভীর মোহ ভাঙ্গিতে নারিত। जावि ना है, काँ फिना है, कथा नाहे जात । हाड़िनारे मीर्घश्वाम, हाड़ित इक्षात ॥ ८मथि नारे, खनि नारे, इटलम পाधत । জানিনাই নভ নদী ছিল শোভাকর R চেয়ে দেখি ধরাপানে প্রান্তর প্রকার। कीवरीन, उसरीन, कर्कन, आधात । চাহিতাম ধর্ণীর তথনি দহন: যদিনা ধরিত তায় একপ্রিয়জন। সেমোহ ভাঙ্গিল পড়ি নিশ্বাস গভীর। যেন তাহে খণ্ডেই কাটিস শরীর। याननि चात्नादक कति धीदत्र यात्र । আর কোধারবে, যাক্, ঘবায় তথায় 🛚 जावि नास योक् कान अनमा नानका নীরব নিশীপ যথা বসি নিরস্কর ।

বলিতা কাননে? বালা, একাএ যামিনী।
আনারে সুঁপিরা প্রাণ কাননে কামিনী।
আনারি লাগিয়া বনে গেছে প্রেমাধার।
কুষাধ্যনি যতে থতে হওরে বিদার।

'' দেখিলাম ক্রইধার, মহারণ্যে অন্ধকার, मीवद्य निर्माला नमी, लाउ भारता वहिरह । चौधन निजन उन्त. नाहि जीव नाहि भक्त. ভরু দলে তুলে জলে, ঘুমাইর। রহিছে ॥ (यखित जातना ननी, त्यनना मुझनावधि, কোন জীব কোনকীট, তথা নাছি নড়েছে। প্রথমে ষেছিল যথা, এখনো রুরেছে তথা, मुठात औष इहारा, मर्क्स शास्त्र श्रेट्ड ॥ करंग्रत्छ नन्न भारन हाहित्स स्मिहिल क्षार्व, বিমল সুনীলাকাশে, শশী হেসে যেতেছে। ভাবিলাম প্রকৃতির, সকলি গভীর স্থির, শুধ্এ হৃদয় কেন, ঝটিকায় মেতেছে। মরি বুদি পারিতাম, গোলে জল হইতাম, किञ्चत मलिएन मिर्म, क्रमंत्र पूमारेख। তথারিপু ছিছাধীন, রহিতাম চিরদিন, কলিতার ক্লাথ তবে, কিনে হৃদে আইত।

Ъ

"जावि व क्षकात, छाड़िए छकात,

काँ পिल कानन उका।

শিহরি অন্তরে, কিজানি কিডরে,

কাঁপে ক্লি শুনি শব্দ।

হুতাশ নাশিতে, সঙ্কেত বাঁশিতে,

গাহিলাম দুখ যত।

বাজাইয়া তায়, মরি লো ভোমায়,

সঙ্গেত করেছি কত b,

একবার যাই, মুরলী বাজাই

আপনি নয়ন ঝোরে।

গলে হৃদি ছুখে, একমাত্র সূথে,

বাঁশী কি মোছিল মোরে ঃ

शाई शतुकरन, त्निश निमादरन,

একাকিনী ৰূপৰতি।

হয়ে চমকিত, রতি এইডীত,

नहेनाम भी धृशि ।।

কে জানে কেমনে, আশা এলো মনে,

षामाति विविछ। इति ।

কত ভাগ্যে ধনি, পাই হারা মণি,

কভু আর ছাড়ান্বে 11,,

ð

ললিতা

''ঝারে প্রাণ নারে, আর হৈ ভোমারে, ্র অভিছোড়া করিবনা। इहित छुज्रात, शांभरन कानतन, দেখিবেনা কোনজনা। काय नाई (मर्टन, उथा स्वयु इहर १. হেন প্রেম নাশ করে। গঞ্জন যন্ত্রণা, কলক রটনা, मिलम माश्य एत । स्थारन व्यवस, क्रमरस नात्र, যেখানে তোমা না পাই। भ रमन किरमन, रम गुरह विरवय, কথন যেন না যাই॥ এখানে মন্মথ, প্রণয়ের পথ, কলকের কাঁটাহীন। ংরি তব মুখে, নিরমল স্থথে, यर्ग यर्थस्य नीन। জালা পৃথিবীর, সব হবে হির,

শুধু স্থেমর মন !

লইয়ে মন্মথ, যাহা মনোমত,
করিব সকলক্ষণ ॥
পিতার সাম্রাজ্য, নাহি তাহে কার্য্য,
লউক্না সে যে কেহ।
থেয়ে বনকল, থেয়ে নদী জল,
পালন করিব দেহ॥"

यग्रथ।

"হেবিধি হেবিধি, কর্থ বিধি,
এই কপালে আমার।
বল তার চেয়ে, স্বর্গপদ পেয়ে,
কিন্তুখ আছেগো আন॥
থিচ্ছেদ যাতনা, দিবনা দিবনা,
এজনমে প্রেয়সীরে।
কাল পূর্ণ হলে, স্থেতব কোলেন্
মরে যাব ধীরেং॥
চল আসি গিয়ে, ভুমিয়ে দেখিয়ে,

কেমন এ মহাবন।
আন্ত আছ অনে, কোন খ্বাৰোমে,
করিনিয়ে নিকেতন।
ইতি প্রথম সর্গ সমাপ্তঃ।"

দ্বিতীয় সর্গ

3

मृति दक्षम यात्र मत्न, त्निक हात्र ताकाधतन, 🏄 প্রিয় মুখ ত্রিসংসার তায়। হ্নদে তার যে রতন, আলো করে ত্রিভুবন, অনা মণি নিভায় নিভায় ॥ এক মহে সদা মন্ত্র, নাজানে আপুনি মতা, যাহা দেখে তাই প্রমাকুল। রবি শশী ভারাকাশ, পয়োদ প্রনন্তাস, সাগর শিখর বন ফল । **रयन ल**क्क विष्णायद्व, ननः তারা গানকরে, কি মধ্র শক্ষীন ভাষা। **इ्डिट्स नामाना कलि, नगुन मलिएल** धनि... উথলে অন্তরে ভাল বাস ॥ প্রেমে যার মন যাঁধা নাপারে দিবারে বাধা मयक लिथ्दा नमी वरन। ভবে যদি করে বিধি, চির বিরহের বিধি, ্তর হুর্গ অন্তরে মিলনে। যেনবা বারিধি পরে, সঙ্গীছীন দৃষ্টি করে, প্রভাতের প্রিয় তারা করে।

त्माहरूत मानाष्ट्राच, एव (छात तमहे शुर्य, মন মজে স্থাখের বিকারে॥ যদি কোন মতে তায়, আঁথির মিলন পায়, ষেন ভাগ জখী বনে বসি। দেখে তমন্ত্রিনী ভাগে, ভীম ঝটিকার রাগে, घन बादक कर्म मुना करी। কলন্ত বিপদ ক্লেশ, বাটকার ধরি বেশ, শিবেগৈরি গ্রভাষ যত। আশ্রর করিয়া আশা, প্রণারের ভালবন, প্রণরির প্রাণে বাডে ৬৩॥ জ্বাসয় নির্বধি, সেও ভালে। পার যদি একবাব আঁথিব মিলন। म्रथंद शबीद बरन, एमरे मरश्च सूर्य ग्रास, • প্রেম রীতি কেজানে কেন্দ্র 🛚 । দেখ দেখি প্রথমের কত চন্তরালি ৷

2

हिन्दा हत्य हत्यवस्ती । इनिदार भग्न हत्वी ॥

हिन्स चौधात वर्त्त ताकात कुनानि ॥

উবার প্রথর তারকা ধনী।
চলিল গজেশগামিনী।
উভয়ে মরেছে হুদি ভাতনে।
উভয়ে পেয়েছে প্রাণ রতনে।

কাঁদে২ ধরি চলে কাননে। গভীর নীরব যামিনী। পিলেপেরে শাখা বিনান ঘন।

আদিবে কেমনে শশিকিরণ। তরল তিমির ভীষণরন।

দেখিরা শিকরে কামিনী। আঁধার আকাশে নক্ষতাবলি। তেমনি কাননে কুসম কলি। আমদে হৃদয়ে যেতেছে গলি।

সে নব নীরদ দামিনী॥ ভীষণ তিমিরে ভীষণ স্থির। মাবে মাবে খনে পত্র শাখীর। খীরে ধীরে করে নির্কার নীর।

चाँभारत नित्रत्थं तक्रिनी । नाभित्रा निर्वरत हेयर जात्ना। रन्द्र्य कृतमग्र मक्रन कात्ना। আঁধারে কুস্ম পারশে গাল।

শেহরে সরোজ অঞ্চিনী।

যেতে পতি সনে চক্রবদনী

নরি কি সজীত শুনিল ধনী।
ললিত মোহন গভীর ধনি।
নির্মর নিনাদ সঞ্চিনী।

নীরব কানন উঠে শিহরি।
শিহরে দুজনে চজনে ধরি।
কাদরে গাঁথিল আমরি মরি।
বাঁধিল মসংকুরজিনী।

3

खुत वरन व्यक्तकारत, रखरमर हातिभारत, स्मारह छात्र क्र्डबरन, व्यापनारक क्रिनिता। नुबनात मूथ रहरत, मुबनारत तुरकरप्रस, रखम व्यात रमहे शारन, এक हरत मिनिता। व्यान रप्रस्त करह रकन, अशहरन धनिरहन, अधनि रमस्तत रमन, हल रमिथ धाहरत। व्यामित कहिरह धनि, श्रीन नाहे रहनधनि, हित्र कानन ख्य, क्रम्स नाहाहरस। বননাঝে যার যত, ধনি স্থানিকট তত.
দেখে শেষে তরু কত, কুঞ্জ এক ছেরেছে।
্রির শোভা কিবাতার, বুঝি প্রেম আপনার বিশ্বপ্র প্রমোদাগার, তার মাঝে করেছে।

4

একুঞ্জ হইতে যেন আমিছে সঙ্গীত! (इन ভाति महेकान बाहेन पुति !! निकुक्ष প্রবেশ মাত্র থামিল সেধনি। কানন পুর্বের মত নীরব অমনি ৷ আশ্চয়া হইয়া দোঁহে রহিলেক হিব [দেখিতেছে শোভা কুঞ্জ গগণ শশির ৮ কেহ নাই বন কিয়া গগণ ভিতর। তথাপি কেমনে এলো এমধুর স্বর॥ ললিভার জ্ঞান হলে। প্রবেশ সমর। বেন কোন ব্বপ্লে দেখা মত শোভাময়। मूड मानातम क्रम नाती नताकारत। দেখিল চ**কিত মত নিকুঞ্জে**র ধারে॥ মশ্বর্থ মোহিনী প্রতি কহিছে হেপ্রিয়ে। तमशि कालिक व मिन अशास वहित्य #

মাজিকার মত যদি কালিকার হবে।
দেব কি মানব রক্ষ জানা যাবে তবে।
আজিকার মত এসো রই এই স্থানে।
এমন মোহন স্থান পাবে কোন খানে।

Ċ

মোহিনী মন্ত্রথ সনে মনোমত স্থলে ।

এমন যামিনী খাপে এমন বিরলে ॥

এমন বিপদহীন বিজন কানন ।

এমন বিমল প্রেম গভীর এমন ॥

কেজানে সে সভ্য কি না স্থান নিশার ।

বনে এলে কে জানিত হেন হলে তার ॥

রবেনা এমন স্থুখ মানব কপালে ।

ভাবিয়ে বিচল চিত্ত এমুখের কালে ॥

এই ভয় মনো মানে হয় আর যায় ।

থেন কোন মেয় ছায়া পড়িছে ধরায় ॥

এই মত গেল নিশি নিকুপ্ত মন্দিরে ।

কেদিন কাটালে স্থুখে নিশি এলো কিরে ॥

V.

কালনে বামিনী প্রকাশে,নিরমল নীলে শ্লী ভাসে নিশীতে নিদিত্বন, নিদা বায় মেঘগণ, নিদ্রা যায় বাতাস আকাশে । উঠিল নীরবে আচম্বিত, প্রেমনর ললিত সঙ্গীত বি স্থির শুনো ভেলে যায়, গগণ গছন তায়,

ক্রিইরিছে পুলক পূরিত।।
বেন কেঁহ বিরহের স্বরে, প্রেমমনী প্রশে শিহত
নাথ হুদে ছিল ধনী, গলিল শুনিয়ে ধনি,

মোহে মিশে প্রাণে প্রাণেশ্বরে। গভীর নিশ্বাদে থামে গান, অবকাশে তারা পার জ্ঞান জানিল ধে কালিকার, সেই ধনি পুনর্বার,

হেথাহতে গেছে অন্য স্থান।।
প্রেরদীরে কহিছে সম্মণ, পনি লো হনি কি মনোমথ
তথানে ভিয়েছে কাল, কামিনি লো কি কপাল,

আজ ধনি অন্য স্থান গত ৷৷
আজিগীত গাহিছে যথায়,চল মোরা যাইলোতথায়
কে গায় কিসের তরে, কেন গায় স্থানান্তরে,

করি চল যাহে জানা বার।।
এধনিতে বুঝি অনুভবে,বুঝি কোন দেবতারা হবে।
আমাদের নরনিলা, এস্থানেতে নির্থিলা,

অপবিত্র হলো হেখা তবে।। এনন ভাবিয়ে স্থানাস্তরে, গিয়ে বুঝি তাই ধনি করে বুঝিবা হয়েছে দোম, দেবতা করেছে রোম, রাথ সনে লক্ষ্য করি ধনি, চলে বনে শশাক্ষ বদনী। ্ন গাঁথা তরুদলে, যন তম তার তলে, ভয়ক্কর নীরব কেমনি।

পুর্বমত নিকুঞ্জ মওলে, আসিল সে প্রেমিক যুগলে : পূর্বমত সপ্লসম, ভূইৰূপ নিরপম:

তথা হইতে দুভগোল চলে!

4

কাঁপিয়ে বিষম ভয়ে বলে হাঁরে বিধি।
এমন সংখতে কেন হেন কর বিধি।
পৃথিবীতে কোন স্থান সুখের কি নয়।
কানন বাদে ও কিলো বিপদ নিশ্চয়।
পৃথিবীতে স্থা কিরে নাছিক কপালে।
হে ঈশ্বর কোড়ে করি লও এই কালে।
দেবতা কুপিত বলি তুজনাতে ভীত।
কিহবে ভৃতীয় রাত্রে দেখিতে চিন্তিত।
তৃতীয় নিশীতে গীত আর এক স্থানে।
পূর্ব মত তথা গিয়া ভয়ে মরে প্রানে।
শেই মত পেলে ভয় চতুর্থ রজনী।
পঞ্ম রক্ষনী যোগে কোথায় সেখনি।

b'

ামিপ্রা পঞ্চমনিশ' গগণ মণ্ডলে। ভীষণ আঁধার ধৃসি, ঘন বন তলে। নীবর নিষ্পাক্তম, সঞ্চীতের আখে। সময় হইল তবু, সেধনি না আদে ॥ বিকট ভাননে ভয়, বুমায় কাননে। (मार्थ उक्त म्लान्स्टीन, यट उक्त भारत । পাপান্ধ-ভিমির ময়, যেন কার মন। নীরবে করাল কার্যা, করিছে কম্পান। শুধ শুষ্ক পাতা খনি, মাঝেং পড়ে। নথা পড়ে তথা গচে, নাহি আর নড়ে॥ পেয়ে লক্ষ অদর্শন, কমুমের বাস। জ্বামোদে আঁধার দেহ, না চাড়ে নিশাস ট পত্ৰ আঁচ্চাদন তলে, ক্ষুদ্ৰ থাল বয় ৷ अं। धात क्रेयर प्रिथ, तवहीन तथ ॥ বুমায় পড়িয়ে জলে, পুস্পবৃক্ষাবলি। 'ম্রাধারে কলিক। গুচ্চ, নির্থি কেবলি॥ নীরবে করিয়া ফুল, **স্তব্ধেভেনে** যায়। কলঙ্কিনী ধির্হিণী নাথ আশা প্রায় ॥ শুষ্কজল থমি জলে, পড়ে একবার। অমনি চমকে বক মন্ত্রথ বামার ॥

अध्वात भाषा जाता मरसंत वनन। বৰষার শশী যেন মেঘ আচ্চাদন॥ ভীম স্তক্ক ভয়ে শুক্ষ বসি ভারা তথা ! উষ্ঠ করে প্রাণ নাহি স্বরে কথা।। ভাবে আন্তি কেন এত কাঁদিছে অন্তর। विलटल विलट्ड गाँदत, क्रिकि शतशत ॥ স্থের কাননে আজি কেন কাল ভাব। ভৌষণ স্থপন যেন দেখিছে স্বভাব॥ আপনি নয়ন কেন করে অকারণ ঃ ববি আজি ছেড়ে যাবে জীবন রতন ! হ্লদেবরি পরস্পরে মুখ পানে চায়। (कें.म (यम कि निवाद विवाद मा शाह । ললিতা লুকলে মাথা প্রাণনাথ কোলে। কাঁদিয়ে মুছার পতি প্রিয়া আঁখি জলে 🖠 ধবিধাছে প্রাণ তাব। পরস্পর তরে। (मत्रमा (मत्रमा विधि (मत्रमा बहुद्र ॥

5

এখনো এলো না কেন সঞ্চীতের ধনি।
ভীষণ নীরব : হারে : আছে কি ধরনী॥
অক্সাৎ কোণা হয় গভীর গজ্জন।
কাঁপিল গভীর বন কাঁপিল দক্তন।

অন্ত নিনাদ উড়ে, যায বন দিয়ে।

অক্সকার ভীম তর হইল আসিয়ে।
ভীমতর নাদে যেন কাঁপে নভ হৃদি।
কাঁদিয়া উঠিল দোঁহে, হা বিধি হা বিদি।
গন্তীর জলদ নাদ, গড়ায় আকাশ ছাদ,

ার জলদ নাদ, সহায় আকাশ ছাদ থেকেং উচ্চতর স্থান।

সমুদ্র কল্লোল সোরে, পরন পাগল জোরে,

ছর্বারে গরজে প্রাণ পনে।

वाद्यक हक्ष्मां जाय, एमिथ नील स्वयंत्राय, कहा माथा नाट्ड किथिवन ।

পাতা উড়ে ঢাকে যনে, পজিতেজে ঘোর স্বনে ভীমং মহীক্ষণণ ॥

व्यातजीम ही श्कार, लक्षर व्यक्तितात,

মানুষ চিবায় ভুতগণে।

সমুক্ত সমান সোরে, বরিষা আছাড়ে জোবে, রেগে২ গজ্জে বায় সনে।

উপৰি২ শ্বনি, আছাড়ে সহস্ৰাশনি,

খণ্ড২ ছেড়েবা গগণে।

বিদারিয়ে বিটপিরে, বজাগ্নি পোডায় শিরে, কাঁদে ঘোর সিংহ ব্যাঘ্রগণ ৷ ভীষণ নীরব! যেন মরেছে ধরনী। হেধাত: কাঁপালো স্তন্ধ আবার কি ধনি। বলিছে গড়ীব স্থরে রে নর মুগল। দেবের নিকুঞ্জে এসে পাও কর্মকল।

করেবার ব্রহ, গরজিল জলধর, মাতিল মরুত কিরেবার। ১০চায় অশুনি ঘন, ভীমবলে তরুগন, মওশিব নাড়িছে আবার।

٥٥

থানিল কটিকারণ, দেখি নিশাশের।
প্রেত মেঘ মহাকাশ, ফিনাজী নিশেশ।
আলে করে জলমর কানন নিকুঞ্জ।
তর্জনত। তৃণ ভূম, পুষ্পালতা পুঞ্জ।।
ক্লমর ছোট থাল বিমল চঞ্চল।
ছায়াকারী শাখাহতে করে বিল্ফুজল।
উজ্জল পুলিন তলে মানতারা মত।
মরিয়ে রয়েছে বড়ে ললিতা মন্মথা।
মানবেরি কি কপাল সংসার কিছার।
বহিতে জীবন ভার কে চাহিবে আর ঃ

বতন কুম্বম কলি যদি যত আশ। বারেক প্রনাঘাতে হয় হেন নাশ ॥ এই কি ললিতা ছিল এই কি মন্ন।। রে প্রেম দেখরে এসে কি রতু বিগত ॥ नाथ कुटल माथानित्य পरफ्ट स्माहिनी । भूरथ मुरथ काँटम एयन छुछि मह्ताकिनी । ললিতার মুখ শশী ভিজে বরিদায়। সরোজ শিশির মাথা মাটিতে লোটায় 🖟 भी उन नहारि करन ज्ञान भाषत ! জলে ভিজে পড়ে আছে অলক'নিকর 🛭 লুটায় কবরী শির, দীর্ঘ ভ্নেপরে। মন্মধ রয়েছে তবু নাহি ভুলে ধরে।। এখনো গঞ্জীর স্থির বসি রূপ মুখে। ছাড়িবার মনতার, মোহময় চুখে।। **टमक्य घूमांत्र दिवन, मक्**ष्ण धहायदि ! निजन्ड का जर (भरत) निश्वाम ना भरत 🖁 স্থির শ্বেত ভাল সেই, নছে নিরমল ৷ দেখিলে শিহরি হয় শরীর শীতল । পড়ে ভার মরণের, ভয়ক্ষর ছায়।। চ क्रिकाश (यनकाटना, कामश्रिनी काश् ।।

বেন-চক্রকরে স্থির বারিধি বিস্তার ! পড়ে তায় শিখ্ঞীর ছায়া অন্ধকার 🙃 .कामनभन्नत भीन मरन्रह नर्म এরি কি কটাক্ষে ছিল সুখের স্বপন।। এখনি কেঁদেছে কত কাদিবেনা আর। সক্রী সমনা নীল নাচিবে আবার 🖟 ব্যিতার প্রিয় তারা মথ্থ বদ্ধে ! চাহিতেই বুঝি মুক্তেছ মরণে " मानदित कि क्लान ! अहेरन इनम्य কোণা তার প্রেম মোহ কোথা আশা এয় টা ারদে বিমল পড়ি শশির কিরণে। ভিত্তে নিস্পাদ যেন জগৎ এফাদে। < क् व्राच क्रांते कृत मूट्य मूच निरः । ে**সক্**দি কুসমাসনে পড়েছে ছিঁভিয়ে ৭ তেমনি একাঙ্গে এরা থেকে চিরকাল: মরিল অধরাপরে কি স্থুখ কপাল। যার লাগি ছিল বেঁচে পারিত গাঁচিতে। ভারি সনে মরে গেল তাহারি হৃদিতে ! সুখের কপাল কত, সংসার যাত্রা। বিকার বিয়োগ শোক সহিতে হলো না ॥

ছিঁড়িয়াছে ভীম বড়ে একই প্রহারে।
কাটেনি ক্রমশঃ কীট, প্রানের স্থপারে।

াঁজুনির গোপনগাসী ছুখ স্রোলোপরে।
পড়ে নাই ভেসেং ডুনিতে সাগরে।
না হ্রার হইরাছে, এই মাত্র স্থির।
এই আছে অবশেষ, সে প্রেমশনির।
ভই খানে দেহামুজ মাটি হয়ে যাকে।
ভানিবে কে দেখিবে কে, কেনে কে ভিজাবে

চক্রিকার নীলাকাশ গায়, ছুটি দেবদারু দেখা য ভীম বনে তলে তার, অতি স্তন্ধ অনিবার,

অদ্যাবধি প্রহরী তাহায়।।
দেই নদী দেই তরুবরে, ছুখময় তরং স্বরে।
বারেক ক্ষান্ত না আছে, নক্ষত্রমণ্ডলী কাছে.

অদ্যপি বিলাপ কেন করে॥ গান্ত্রীর সেধুনি নিরবধি, যেনবা সন্ধ্যায় শরন্ত্রদী শুনিলে শিহরি অরি, মেধার মারুতোপরি, জানিনে যেতেছি কি জ্লাধি॥ শ্বামলা,গুণিমুনী চির নগ,ব্যাপিয়াছে সেই স্থানসং ভারাকল ভারা ধরি: নিরস্ত আমোদ করি,

স্থাপানে শিহ্রিছে নত।। একাননে গভীর এমন, কে করে রে বাশরী বাদন অনিবার নিশা ভারে, যেন কার অনুবারে,

গার সাধে মনের ঘাতন।।
্যাহমন্ত্রেতার স্থির বন, শোনেধনি বিহীন স্পানন,
পত্রটি নাহিক সরে, যেতে২ শুনে স্থরে,

নাহি সরে নীরধর গণা। চক্রিকার শুনা বুঞ্জোপর, মোহন স্প্রাজ শোভাগর। কারা যেন শুনে তার, উড়ে নীল নভ গায়,

মর্মারিত প্রচার অধ্য ।

বাহেকত শুবানাস কারে, কুসুম বরিষে কুপ্তোপরে,
ভাঙ্গে শ্বপ্ন উদা আসি, অমনি নীরব বাঁশী,

গলে যার সেকপ নিকরে।

্লিছয়ে এই কঞ্চানে, মুল্য-মোহিনী নাথসনে,
প্রতি নিশী এইম ১, হয় যথা নিদ্রাগত,

থেম ক্লিরতন জুজনে॥ সমাপ্তিঃ।

মানদ।

া মৃত। প্রিয় ধনের উল্লেখে)।

ফলানি মূলানি চ তক্ষন্বনে।
পিরীপেচ পশান্ সরিতঃ সরাংসিচ।
বনং প্রবিশ্যের বিচিত্র পাদপং।
স্থী তবিষ্যামি তবাস্নিবৃতিঃ।
বাল্যিকিঃ

There is a pleasure in the pathless woods, There is a rupture on the lonely shore.

Childe Harold

হা গবান ধর কিরে জনয় ম ওলে ।

শর কি কোপা ও মম, মনোমত ছলে ।।

কি আছে সংসারে আর বাঁধিবারে মেনরে ।

বে কালে কেটেছে কাল প্রণয়ের ভোরে ।।

এক ম ত্র সুখ মম ছিল যে সংসারে,

অাধার জীবনাকালে একাকিনী তার। ।

একবার জ্লিয়ে সে মিশেছে আঁধারে,

সংসার জলেরি মত হইয়াছে সার। ।।

যেতে যদি চিত্র সাত্র রাখিয়ে আমার ১ ভিজাতেম আঁথি জলে, বুকে করি ভাষ 🛭 धनिबात पर कृषि धक्हे याउना ! त्म र्यंन कीवन भारतः अकडे घटेना ।। হৃদয় কুসুম যার। ভাবিত আমায়। কেছানে কেন রে আর, কিরিয়া নাচায় 🖟 তবু যে বাসিত ভাল মুছাতো নয়ন। ভাছারে: হয়েছি বিষ কপাল যেমন ।। मटम कवि काँ मिवना तत प्रश्कारत । व्यापनि नरान उतु करत चारत चारत ॥ জীবন একই সোতে চলিবে আমার रजालाम काँ निद्द थान मकलि आभात ।। ष्याधात निकुत्क यन नीत्रत्वत् ननीः একাকী কুসুম তায় চলে নিরব্ধি।। কারে নাহি বাসি ভাল, কেহ নাহি বাসে क्राप ठाला প्रायाखन, श्रम विनारम !! সংসার বিজন বন, অন্তরে আঁধার। (म्बिट बार्थभी मुथ, ना शांति दा बात ।। রব না তাদের মাঝে, সে নাই যে থানে। খর কি ধর্মি মম মনোমত ছালে !!

্জেন বিপিনময় দ্বীপে একা থাকি। ভাবিয়া হৃদির জালা ভ্রমিব একাকী টা ্লিগির দ্বীপের শোভ। মোহিত নয়নে। ांविभिन गाविधि नील विभाग गगरा ॥ চারি পাশে গরজিবে ভীষণ তরকে। त्यु क क्या भित्यामाना नां हा है ते तह ।। শিরে মতু সমীরণ শব্দে মিশে তার : বেকে বেগেই ছাড়িৰে ছ্লার ৷৷ नित्रिय नीत्रवाद्यः जीवन जुवत्। ললার বিশাল ব**ফ জলধি উপর** 🛚 कृषियः जनारे जीय खादारन गगरन । ावरक शकीत खरत सव अध गरन ॥ পদে তার আছাড়িবে প্রমন্ত তরন্ধ,

বুকে তার প্রহারিবে পাগল প্রন। দহাধর মানিবেনা অধমের রঙ্গ

ললাটের রাগে কবি ভর প্রদর্শন।।
কক শ সামুতে তার বিহরি বিজনে।
আমরি এসব কবে হেরিব নয়নে।।
মোহে মন মজাইবে প্রকৃতি মোহিনী।
গাঁবন যাইবে যেন সুপনে যামিনী।।

অালো মাখা কালো বাস পরিলে উঘায় অনিবার ভরতর জলনিধি ধায় 🛭 নিশ্বা বিশাল বক্ষ অন্তরে আকাশে। শ্বেত শশিহায়। নীলে ধীয়েং ভাসে।। শिष्टतिरद कृष्टि भारत, स्म निश्व भगीरह । शास्त्र कुञ्ज हाह। कन नाहाद्व मधीद्र ।: নির্থিব শ্শী। শ্বেত গুগুণ মঞ্জে। কত মেঘ বায় ভারে শেতাকালে চলে স জিরিপুরে স্থুখ ভারা নেচে নিভে যায় : ্যন শেষ মন আশা নিরাশ। নিভার ॥ নচোটবে করতার জলের ভিতর। ভাছারি গানেতে চেয়ে রব নিবস্থা গ পুনিব স্কুরব মৃত্যু সমীরণ করে। স্বার শিশির মাখা নিকুঞ্জ নিকরে : পুলকে দেখিব আমি লোহিত আকাশে সংযোধির পাশ থেকে তপন প্রকাশে ! তরল তর্জ মেঘ অনল সাগরে। নিজে রবি নভ রাজ দেখাইছে করে গ ठशन स्नीन करन उक्न उपन,

ওক্লতা তৃণ মাঝে করিবে তথন, ঝিকিমিকিং নীহার নিকর ।

जिल्लाहात घमनील विमल अधात । শালিয়া রহিলে রবি অনল সাগরে ! শ্তে মেন অগ্নি মেণে ফিরিলা বেড়াও ! রব **ততে অন্ধানার নিক্ঞ না**ঝার। হীর ভীম ভরুগণ আক্ষাদে আধার। ক্রিবেক ডাকুলতা সিন্ধা চারিধার ॥ होतद लिकन घीटल तिर्देश मकन। স্পান হান পাত্র আর কুস্তুমের দুল ॥ শ্বনিত গরজে ঘোর তর্ম্ম নিকরে। াবা বিদারে বন এক পিক স্বরে । ারুলত: মাঝ দিয়াবিমল গগণ। কিয়া জলে রবিকর হবে দরশন 🛚 कारलाकरल ठाकामिटल अरमाय चौथाउँ। ব্যনিবার ভর্তর বিশাল বিস্তার 🎚 ্সই তুঃখ্স্বরে হাদি শিহরি চঞ্চল। কাদিবে নাজানি কেন আঁথিময় জল ট যেন স্থা কালে শোনা সুখের মঙ্গীত! শাচাইয়ে ক্লদি ডোর জাগে আচ্ছিত।

আপনি ভাসিবে আঁথি দরং ধারে।
সুদেশ শ্ববির চেয়ে পথে।ধির পারে।
দ্বীনা রূপদী এক। কাঁপে এক তার।

ঁষেন নব প্রণয়িনী প্রণয় সাগরে। ছেড়ে গেছে কর্ণার একা পথ ছারা-

কর্ত আশা কও ভয়ে কাঁপিছে অন্তবে। যথন সন্ধায় শেত অন্ধ শশধরে।

ধীরেং ভেসে ফাবে নীলের সাগরে।
আকাশ বারিধি সনে করি পরশন।
ভারি পাশেধরিবেক নিষোর বসন।
বারেক ভাবিব সেই রমনী রতন।
রেখেছিল বেঁধে যার প্রেমমোহে মন।
অক্ষকারে ভির স্থেতে অক্ষকার বনে ১

যেন বালা জালা দ্বীপ এক। তেসে যায়। এক আলো ছিল প্রিয়ে আঁখার জীবনে। কেনরে সমীর কাল নিভালে রে তায়।

আমনি বিপিন মাঝে এগনি সময়ে।
ভাবিব সুঁপেছি কত হৃদয়ে হৃদয়ে।
এমনি করেছে থেঁদে তরং বারি।
নত্ন মুদিল ধবে রতন আমারি॥

যবে ভাসি অন্ধ শশী ভারামর:কাশে। স্বপ্ন ভূমি সমধর। অষ্প্রট প্রকাশে। वायां व वाजाम दय की नात्मारक घरुव । **साहेर्य ममूज रि**त व्याः एत रहत ॥ অনিবার **সর স**র উচ্চে তঞ্গণ। দেখিব মিশিবে শুন্যে প্রাণ্ডের করন : আঁখি আরু নীলাকাশ মাধে ভার ছাচাং ভা**লোম্য বেশে সেই** কুল্ম্ম কাষা " ८न**३ (म कुछल भार**क ।शिलाष्ट भनरह । সেই স্থির মোহময় প্রথয় বদনে গ গভীর দর্শন মোহে ভুলিব দশ্ন: (5 द्वा त्व का निव मा मिलाल कर्मन व পূর্মশী মোহমন্তে চক্তিকণ মনে। গিরি বাধিবনাকাশ নিদ্রিত নীরবে খ চন্দ্রকার ভীম স্থির নীল জলপির ৷ চক্মকু নাচে ভায় কিরণ শশির 🖠 मनः स्टूर्य मत्नाष्ट्र स्माञ्च कनस्य ভার মাঝে বেড়াইব চারু ভরি লামে " ভাসিবে নিবিড় নীলে এক শূল্পের দেপিব জ্বলিছে স্থির নক্ষত্র নিকা

পাশে নীল জল স্থির রব অনিবার।

যেমন সৃপনে কথা প্রণারী বামার।

একবার পরশিবে মলয় সমীরে।

যেমন সৈ পরশিত ভাগিরণী তীরে।।

গুমেতে আকাশে মিশে তর্ফল তীরে।

গরস্পর গায় পরে ছুলে ধীরে ধীরে।

পরম্পের গায় পরে ছুলে ধীরে ধীরে।

প্রম্মেহ ভরে যেন, আবেশের রক্তে।

প্রাণী চলিয়া পড়ে প্রণরীর অক্তে।

ভীম স্থির মাঝে কোন রব শুনিব না।

ভবে যদি নির্বামা স্বর্গীয়া ললনা।।

শুনাভরে শশীকরে সুপুময় মিশে,

বাজার মুরলী মৃত্ মনোমোহভরে। প্রকাশিরে যত জ্বালা প্রণয়ের বিবে,

গভীর কোমল ধীর যাতনার স্বরে॥
মনোসাধে মজে তার ভাবিবেক মন।
স্থপনে নিরাশা সনে আশার মিলন।।
মরিরে মোহিত মনে শুনিব সে সুরে,

মোহভরে মুখপানে চেয়ে রব তার। হা বিধাতঃ বল২ রারেক বল রে,

हत् कि अभन हिन क्लात्न व्यागात !!

অর্থর। দেখিব শুদ্ধ লতিকার কুঞ্জে। জ্বলে যথা শশিক্ষর ভিত্ত প্রভাপুর্য়ে । লবীন কুস্তুম হাসি ছাড়িছে সুবাস। যেন তৃণ লত। মানে নক্ষর প্রকাশ 🛭 एमरत्व लवामा मर्ग मार्ग मार्ग ए व চক্রের **কিরণে যেন** চম্পক্রের ছার্ড শত বিশা **স্থর্গস্তুরে অপ্স**ার ব্যক্তরে ১ তত গান গন্ধ সনে শুনোতে ফ্লিংস। वादि कल खुरन भिन द्रमार्थ यह सार्व । ্যতন বসন রয় কথন কি ভাবে 🛭 ভারে: লোকে হবে কুঞ্জ বিজন খাঁলার । अकाकी कामिव **उनस्थ** बहाल्लहा । নিমিষে ঘচিল স্থা মোহিনী মঙালে । भिष्ठे कुल भिष्ठे लेखा थीरत २ स्मारल ॥ কাননে সাগরে ধরে অমারশ্যা হসিঃ কালো মেয়ে ঢাকা শির ভীষণ রাক্ষসী গু গিরিগুহ' হতে শিরে ক্রোধ বাটকার। শ্বনে তাহে মিশাইব, অংশ হ্ব তার 🛭 चीमत्रा शानभरन भागम भवन। युर्तिया युर्तिता ताटण कटत गतकन ।।

গরজিছে রেগে রেগে অসংখ্য তরক্ত। তমোমানে শ্বেত ফেলা আছাড়িছে অক্ত। গলীর সন্ত্রীর বীর জলধর ধনি। ফাটাবে গগল ক্সলি চেচারে অশনি। উপরি উপরি রেগে ছিড়িছে শিগর। সবে যেন কম শ্রেত। 'প্রলয় রে নর॥'' ভয়ক্ষর ভুতগন, নেচেই ব্যুক্তে.

উ**টেচঃস্ব**রে কাঁদিবেক ঝড়নাদ সঞ্চে: বিকট বদন ভঙ্গী গিরিপ্রি চড়ে,

ভীম শ্বেক দন্তাবলী দেখাইয়ে রক্ষে ।
বারেক চমকে দেখি চপলা কারণ।
কড়মড় করি করে মানুষ চর্কণ॥
মার্ভ হয়ে শুনিব সে ভীষণ সঙ্গীতে।
সে যদি গিয়াছে আর ভর কি এ চিতে॥
পরেতে গভীর স্থির জগৎসংসার।
কাদিরা ঘুমালো যেন নবীন কুমার॥
যেন তার কর্মনার প্রতিমা প্রকাশ।
পুজিব গভীর মোহে, বিগত বিলাস॥
শ্বিয়াজীবন মন, যৌবন রতন।
এমন স্থারি মনে হইব পতন॥

ভাবিব ঝাটক। মত ছিল মম মন।
এগভার স্থির মত হয়েছে এখন।
মনের মানস এই রই হেন স্থলে।
ধেয়াইব শানি নুখী নয়নের জলে।
কারে, অনবাগী নই বিনে সনাতন।
জাগ্যা প্রিত্র নাম হল্ব প্রেন।
প্রিয়া মৃদ্যা মুখ স্মরি ছ্যাভিবে এপেন।
আনিবেনা শুনিবেনা ব্যাদিবেনা নেন।
অনিবার জলারল কাঁদিবেনা কেবল।
আহছ কি প্থিবি হেন বিনে। চন স্কলা

अक्षात्यः ।